thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 71 अंक : 49
सृष्टि संवत् 1960853115
15 मार्च 2015
दयानन्दब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–71, अंक : 49, 12/15 मार्च 2015 तदनुसार 2 चेत्र सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

सत्य त्रिकालाबाधित

-ले० श्री स्वामी वेदानन्द जी (दयानन्द) तीर्थ

स हि सत्यो यं पूर्वे चिदेवासश्चिद्यमीधिरे।
होतारं मन्द्रजिह्वमित्सुदीतिभिर्विभावसुम्।।

-ऋ. 5/25/2

शब्दार्थ- **हि**=सचमुच **सः**= वह **सत्यः**= सत्य है **यम्** = जिस **होतारम्** = महादानी **मन्द्रजिह्वम्**: = वाणी को मस्त कर देने वाले **विभावसुम्** = प्रकाश सम्पत्ति वाले को **इत्**= ही **पूर्वे+चित्**= पूर्ववर्त्ती विद्वान भी **सुदीतिभिः** = उज्जवल प्रकाशों के द्वारा **ईधिरे**= प्रकाशित करते हैं और **यम्** = जिसको **देवासः+चित्**= निष्काम विद्वान भी प्रदीप्त करते हैं।

व्याख्या= इस मंत्र में भगवान को सत्य= त्रिकालाबाधित कहा गया है। वेद कहता है- **स हि सत्यः**= वहीं सत्य है।

प्रकृति सत्य है, सदा रहती है, किन्तु परिणामिनी है, शक्लें बदलती हैं। बहुरूपिए की भान्ति नानारूप धारण करती रहती हैं। अभी एक रूप में हैं, दूसरे क्षण में दूसरा रूप है। मुग्ध (मूर्ख) जन धोखा खा जाते हैं, वे समझते हैं, पहले रूपवाली और थी, यह और है। मानो तीनों कालों में एक न रही। दार्शनिकों ने प्रकृति को धर्म-लक्षण-अवस्था परिणाम वाली माना है। मिट्टी ले लो, इसे कूट पीट कर घड़ा बनाया। मिट्टी का ढेलापनरूपी धर्म दूर हुआ और घड़ारूपी धर्म आया। ढेले में और घड़े में भेद है। बालक ढेले और घड़े को एक नहीं मान सकता। कोई ज्ञानी ही जानता है कि ढेले और घड़े दोनों से मिट्टी जुदा नहीं है।

जीव अभी सुखी है। पुत्र-कलत्र-मित्र के संग बैठा मौज मार रहा है। अब वही रो रहा है। सुख-दुख, हर्ष-शोक आदि द्वंद्वों से अभिभूत होने के कारण अन्य होता हुआ भी जीव अनन्य प्रतीत हो रहा है।

भगवान तो कूटस्थ हैं। उसमें धर्म, लक्षण और अवस्था के परिणाम होते ही नहीं। वह सदा एकरस रहता है। वह आप्तकाम है, अकाम है। कामनाओं से आक्रान्त ही क्लान्त हुआ करता है। प्रभु अथर्ववेद के शब्दों में **कुतश्चनोन** कहीं से भी त्रुटिवाला नहीं हैं। कोई कामना न होने से उसे हर्ष-शोक व्यापते ही नहीं, अतः **वहीं सत्य है**- सदा एकरस है। वह सत्यस्वरूप, सत्यमानी, सत्यवादी और सत्यकारी है। वह सत्यस्वरूप ऐसा है कि-

यं पूर्वेचिद् देवासश्चिद्यमीधिरे- जिसे पूर्ववर्ती विद्वान तथा निष्काम ज्ञानी प्रकाशित करते हैं।

सदा-सर्वत्र-सर्वथा विद्यमान भगवान प्राकृत मनुष्य को प्रतीत नहीं हो रहा। वह उन आंखों से उसे देखना चाहता है। जो उसके दृष्टिगोचर न हो, उसकी सत्ता मानने को वह तैयार नहीं बेचारा भटक रहा है। कारुण्कि ब्रह्मनिष्ठ आता है और उसे समझाता है-ओ भोले ! क्यों भटक रहा है? आंखों का जो विषय नहीं, इन्द्रियों से जो गृहीत नहीं हो सकता, उसे क्यों कोई इन्द्रियों द्वारा जानने का हठ कर रहा है। अरे भाई! वह तो-

अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं तथाऽरसं नित्यमगन्धवच्च यत्।

-कठो. 1/3/15

शब्दरहित है, अतः वह कान का विषय नहीं हो सकता, उसमें स्पर्श-गुण हैं, वह त्वगिन्द्रिय से कैसे प्रतीत हो, वह रूपरहित है, अतः आंख उसे कैसे देखे, रसना कैसे चखे, गन्ध की सत्ता वहां है नहीं, नाक से कैसे ज्ञान हो? वह सदा एकरस है।

देख !आंख से सभी रूपवाले पदार्थों को लोग देखते हैं, किन्तु क्या आंख को भी देख पाते हैं? तथापि आंख की सत्ता का अपलाप कोई नहीं करता। उसे ज्ञानी-ध्यानी ही देख पाते हैं-

नित्यं विभुं सुसूक्ष्मं तदव्ययं तद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः।

-मुण्डकोप. 1/1/6

उस नित्य सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, अत्यन्त सूक्ष्म, अविकारी, वस्तुमात्र के अधिष्ठान भगवान को धीर ही सर्वथा देखते हैं।

धीर=धी+र= बुद्धिमान कहो, विद्वान कहो, ज्ञानवान कहो, देव कहो- एक ही बात है। विद्वान ही उसे जानते और उसका प्रकाश करते हैं।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

thearyasamaj.org

ऋग्वेद में राजा प्रजा का सम्बन्ध

-ले० श्री शिव नारायण उपाध्याय 73, शास्त्री नगर दादाबाड़ी कोटा (राजस्थान)

ऋग्वेद में राजा प्रजा का सम्बन्ध पिता-पुत्र जैसा माना गया है। चूंकि राजा प्रजा द्वारा चुना गया होता है अत: उसका कर्त्तव्य भी है कि प्रजा के जान-माल की सुरक्षा करे तथा उन्हें आजीविका के साधन उपलब्ध करावें। राजा प्रजा के आपसी सम्बन्धों के विषय में ऋग्वेद का कथन है-

अधा यथा न: पितर: परास: प्रत्नासो अग्न ऋतमा शुषाणा:।
शुचीदयन्दीधितिमुक्थशास: क्षामा भिन्दन्तो अरूणीरप व्रन॥

-ऋ.4.2.16

पदार्थ-हे (अग्ने) अग्नि के समान तेजस्वी राजन्। (यथा) जिस प्रकार से (न:) हमारे (परास:) होने वाले (प्रत्नास) हुए (पितर:) पितृ लोग (शुचि) पवित्र (ऋतम्)सत्य न्याय युक्त व्यवहार को (आशुषाणा:) सब प्रकार बांटते और (उक्थशास:) प्रशंसित शासन वाले (क्षाम) पृथ्वी को (भिन्दन्त:) विदारते हुए (दीधितिम्)नीति के प्रकाश को (अयन्) प्राप्त होते हैं (अध) इसके अनन्तर (अरूणी:) प्राप्त प्रजाओं को (अप, व्रन) स्वीकार करें वैसे (इत्) ही आप लोग हम लोगों से बर्ताव करो।

भावार्थ-प्रजा कहती है कि हे तेजस्वी राजन्। जिस प्रकार से हमारे पितृ लोग आपस में सत्य और न्याय युक्त व्यवहार करते रहे हैं और प्रशंसित शासकगण नीति पूर्वक इस पृथ्वी पर कार्य करते रहे हैं वैसे ही आप हम लोगों से व्यवहार करें।

राजा को यथार्थ वक्ता पुरुषों के वचनों को सुनकर और उन पर मनन करके प्रजा के लिए तदनुरूप कार्यों को तुरन्त करना चाहिए।

एता ते अग्न उचथा-निवेधोऽवोचाम कवये ता जुषस्व।
उच्छो चस्व कृणुहि वस्यसो नो महो राय: पुरूवार प्रयन्धि॥

-ऋ. 4.2.20

पदार्थ-हे (वेध:) बुद्धिमान (अग्ने) विद्वान् तेजस्वी राजन्। हम लोग (कवये) सब विद्यावान् (ते) आपके लिए (एता) इन (उचथानि) उचित वचनों को (अवोचम्) कहें (त) उनको आप (जुषस्व) करो और (उत् शोचस्व) मनन करो (कृणुहि) और फिर करो। (पुरूवार) हे आप्त पुरुषों को स्वीकार करने वाले (न:) हम लोगों के लिए (मह:) बड़े (वस्यस:) अतिशय (राय:) धनों को (प्र, यन्धि) उत्तमता से प्रदान करो।

भावार्थ-राजा से विद्वान् लोग कहते है कि हे राजन्। आप हमारी प्रार्थना को सुनो, उस पर मनन करो और फिर उसको कार्य रूप में परिणीत करो! आप आप्त पुरुषों का सम्मान करने वाले और उनके लिए आजीविका हेतु धन का प्रदान करने वाले हैं। कृपा करके हमें विविध प्रकार का धन प्रदान करो।

वैदिक परम्परा में राजा का स्थान बहुत ऊँचा माना जाता है। गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि मनुष्यों में भगवान् का अंश होता है। ऋग्वेद की भी मान्यता है कि राजा का जन्म बड़े पुण्य कर्मों का फल है।

आ यूथेवक्षुमति पश्वो अख्यद् देवानां यज्जनिमान्त्युग्र।
मत्तीनां चिदुर्वशीरकृप्रन्वृधे चिदर्य्य उपरस्यायो:॥

-ऋ. 4.2.18

पदार्थ-हे (उग्र) तेजस्वी राजन्। आप (देवानाम्) विद्वान् (मर्त्तानाम्) मनुष्यों के (अन्ति) समीप में (यत्) जिन (जनिम्) जन्मों को (आ, अख्यत्) सब ओर से प्रसिद्ध करते वा (क्षुमति) बहुत अन्न जिसमें विद्यमान उनमें (यूथेव) सेना जनों के समान प्रसिद्ध करते हैं। (अर्य्य:) और जैसे स्वामी (चित्) वैसे (उपरस्य) मेघ और (आपो:) जीवन प्राप्त कराने वाले (पश्व:) पशु की (चित्) भी (वृधे) वृद्धि के लिए (उर्वशी:) बहुत व्याप्त होने वाली क्रियाओं की विद्वान् लोग (अकृप्रन्) कल्पना करते हैं।

भावार्थ-मनुष्यों में राजा का जन्म कई जन्मों के पुण्यों का फल मानना चाहिए! यदि राजा नहीं हो तो कोई भी व्यक्ति स्वतन्त्रता पूर्वक नहीं रह सकता है। जैसे मेघ के द्वारा सबका जीवन चलता है और वृद्धि भी होती है वैसे ही राजा के कारण सम्पूर्ण प्रजा की वृद्धि और जीवन होता है।

राजा को किसी से मोह और द्वेष नहीं होना चाहिए।

आशृण्वते अदृपिताय मन्म नृचक्षसे सुमृडीकाय वेध:।
देवाय शस्तिममृताय शंस ग्रावेव सोता मधुषुद्यमीडे॥

-ऋ. 4.3.3

पदार्थ-(वेध:) हे बुद्धिमान् राजन्। (यम्) जिसकी मैं (ईडे) स्तुति करता हूँ (आश्रृण्वते) सब प्रकार सुनते हुए (अदृपिताय) मोहरहित (नृचक्षसे) सत्य और असत्य व्यवहारों को करते हुए जनों के साक्षात् देखने और (सुमृडीकाय) उत्तम प्रकार सुख देने वाले, सुख और (अमृताय) जल के समान शान्त स्वरूप (देवाय) उत्तम गुणों से युक्त आपके लिए (मन्म) विज्ञान का मैं उपदेश देता हूँ वैसे आप (ग्रावेव) मेघ के समान (मधुषुत्) मधुरताओं को उत्पन्न करने वाले (सोता) अभिषेक करने वाले हुए (शस्तिम्) प्रशंसा की (शंस) स्तुति कीजिए।

भावार्थ-वही राजा उत्तम होता है जो मोह आदि दोषों से मुक्त होता है। सबकी प्रार्थनाओं को सुनता है। सत्य और असत्य का विचार करके मेघ के समान प्रजा को अनेक प्रकार का भोग प्रदान करता है और सबके साथ न्याय करता है।

राजा का सम्मान प्रजा तभी करती है जब वह न्याय प्रिय हो और बिना किसी पक्षपात के सबके साथ न्यायानुकूल व्यवहार करता हो।

त्वं चिन्न:शम्या अग्ने अस्या ऋतस्य बोध्यृतचित्स्वाधी:।
कदा त् उक्था सधमाधानि कदा भवन्ति सख्या गृहे ते॥

-ऋ. 4.3.4

पदार्थ-(अग्ने) हे तेजस्वी राजन्। (त्वम्) आप (न:) हम लोगों की (अस्या:) इस प्रजा के (ऋतस्य) सत्य के (शर्म्य) कर्म के लिए (स्वाधी:) उत्तम प्रकार सब प्रकार विचार करने और (ऋतचित्) सत्य का संग्रह करने वाला (कदा) कब (बोधि) जानो और (चित्) भी (ते) आपके (गृहे) गृह में (सधमाधानि) मेल के स्थानों में श्रेष्ठ और (उक्था) उचित भी (ते) तुम्हारे (सख्या) मित्र के कर्मों का अभिप्राय (कदा) कब (भवन्ति) होते हैं।

भावार्थ-राजा के साथ प्रजा का जुड़ाव तभी होगा जब वह प्रजा के साथ सत्य और न्याय का व्यवहार करेगा। तभी प्रजा राजा के अनुकूल कार्य करेगी और राजा प्रजा में एक सम्मति स्थापित होगी।

अगली ऋचा में कहा गया है कि राजा को श्रेष्ठ पुरूषों की निन्दा नहीं करनी चाहिए। साथ ही सब राज कर्मों के लिए समय व्यवस्था बनानी चाहिए।

बड़े पदों की नियुक्ति करते समय राजा को प्रजा के श्रेष्ठ पुरूषों की सम्मति भी लेनी चाहिए।

अस्वप्नजस्तरणय: सुशेवा अतन्द्रासोऽवृका अश्रमिष्ठा:।
ते पायव: साध्रयञ्चो निषद्याग्ने तव न: पान्त्वमूर॥

-ऋ. 4.4.12

पदार्थ-हे (अमूर) मूर्खादि दोषों से रहित (अग्ने) अग्नि के समान तेजस्वी राजन्। जो जन (तव) आपके (अस्वप्नज:) जागने वाले (तरणय:) युवावस्था को प्राप्त (अतन्द्रास:) आलस्य (अवृका:) चोरीपन (अश्रमिष्ठा:) और थकावट से रहित (सुशेवा:) उत्तम सुख युक्त (सध्रयञ्च:) सत्कार करने और (पायव:) पालन करने वाले नौकर हैं (ते) वे (निषद्य) निरन्तर स्थित होकर (न:) हम लोगों की (पान्तु) रक्षा करें।

ऋ. 4.6.6. में कहा गया है कि राजा को प्रजा को समान दृष्टि से देखना चाहिए। राजा की प्रवृत्ति पक्षपात रहित हो और जिसकी नीति प्रजा के लिए निरन्तर विकास की हो तो राज्य में कोई भी अपराध करने की इच्छा ही नहीं करेगा।

कपटी, ठग, दुष्ट स्वभाव वाले पुरुषों को दण्ड दिया जाना चाहिए।

अच्छा कविं नृमणो गा अभिष्टौ स्वर्षाता मघवन्ना-धमानम्।
ऊतिभिस्तभिषणो द्युम्नहूतौ नि मायावान ब्रह्मा दस्युरर्त्त॥

-ऋ. 4.16.9

भावार्थ-हे मनुष्यों को स्नेह करने वाले अत्यन्त धनवान। आप कपटी, दुष्ट स्वभाव वाले मूर्ख मनुष्यों का नाश करके और धार्मिक विद्वानों का सत्कार करके प्रशंसित होकर हम लोगों के राजा बनिये।

अपराधियों को दण्ड अवश्य ही दिया जाना चाहिए।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

आर्यत्व के गुणों की पहचान

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना इस उद्देश्य से की थी कि संसार भर में वैदिक धर्म का प्रचार करके मनुष्य मात्र को आर्य बनाया जाए। उद्देश्य जितना महान है उतना ही विशाल भी है और उसकी पूर्ति उससे भी कठिन प्रतीत होती है। कठिनाई के अनेक कारण हैं। उनमें सबसे बड़ा यह है कि आर्यत्व स्वयं एक कठिन वस्तु है, ईसाई उसे कहते हैं जो ईसाई पादरियों द्वारा बतलाए गए सिद्धान्तों को स्वीकार करता हो। मुसलमान उसे समझा जाता है जो हजरत मुहम्मद और कुरान पर ईमान रखे। इस दृष्टि से ईसाई अथवा मुसलमान को पहचानना बहुत आसान है परन्तु आर्य शब्द की व्याख्या इतनी सरल नहीं है। आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ। जिसके कर्म और विचार दोनों श्रेष्ठ हो वह आर्य कहलाता है। महर्षि दयानन्द ने अपने स्थापित किए हुए समाज का नामकरण न तो अपने नाम से किया और न ही किसी अन्य के नाम से। उन्होंने संगठन का नाम आर्य समाज के नाम से रखा। इसकी यही सुन्दरता है कि महर्षि ने नामकरण द्वारा ही अपने अभिप्राय को सर्वथा स्पष्ट कर दिया। वह आर्य समाज को अन्य मत मतान्तरों की तरह कोई पन्थ नहीं बनाना चाहते थे और न ही ये चाहते थे कि केवल किन्हीं मन्तव्यों को मान कर कोई व्यक्ति धार्मिक समझा जा सके। वह धार्मिक तभी समझा जा सके जब उसके कर्म भी आर्यत्व लिए हो। आर्य किसे कहते हैं? इस प्रश्न का सरलतम उत्तर यह है कि जिसके विचार शुद्ध और विशाल हो और जीवन धर्मानुकूल हो वह आर्य है। दूसरा प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि धर्म क्या है? इस प्रश्न के उत्तर में महर्षि दयानन्द ने काशी शास्त्रार्थ में जो उत्तर दिया था वह अत्यन्त सरल और सुबोध है। महर्षि दयानन्द जी ने मनुस्मृति का यह श्लोक उद्धृत किया था:-

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।

महर्षि के शब्दों में धर्म का निरूपण वेद स्मृति वेदानुकूल आप्तोक्त, मनुस्मृत्यादि शास्त्र, सतपुरूषों का आचार जो सनातन अर्थात् वेद द्वारा प्रतिपादित कर्म और अपने आत्मा में प्रिय अर्थात् जिसको आत्मा चाहता है जैसा कि सत्य भाषण ये चार धर्म के लक्षण अर्थात् इसी से धर्म अधर्म का निश्चय होता है। वैदिक सिद्धान्त सत्य होने के कारण मनुष्य के जीवन को धार्मिक बनाते हैं। सत्य सिद्धान्त सत्य कर्म के आधारभूत होने के कारण धार्मिक जीवन के लिए आवश्यक है। परन्तु केवल यदि सिद्धान्त हो और उनके अनुसार कर्म न हो तो मनुष्य धार्मिक या आर्य नहीं कहला सकता! इस विचार से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वही मनुष्य आर्य कहलाने क ा अधिकारी है जिसका जीवन धर्मानुकूल और श्रेष्ठ हो ।

ऐसे मनुष्य के बाह्य चिन्ह क्या होंगे? किसी विशेष प्रकार के कपड़े या किसी विशेष प्रकार के तिलक आदि धार्मिकता या आर्यत्व के चिन्ह नहीं हो सकते। यदि वस्तुत: उसमें धर्म के लक्षण हैं तो उसके चेहरे पर शान्ति होगी, व्यवहार में उदारता और क्षमा होगी। वह क्रोध और लोभ में नहीं आएगा। सारांश यह कि उसका जीवन अच्छे और उँचे जीवन का एक आदर्श होगा। वह सबके साथ प्रेम और सौजन्य का व्यवहार करेगा। दीन-दुखियों की सहायता करेगा और अन्याय और अत्याचार का दृढ़ता से सामना करेगा। भय और प्रलोभन उसे अच्छे मार्ग से न हटा सकेगें। वह निजी जीवन में अच्छा पुत्र, सदाचारी गृहस्थ, और अच्छा नागरिक होगा।

ये सब आर्यत्व के चिन्ह हैं । इससे यह स्पष्ट है कि यदि हम मनुष्य मात्र को वैदिक धर्म का उपदेश देकर आर्य बनाना चाहते हैं तो सबसे पहला कार्य जो हमें करना चाहिए वह यह है कि हम अपने आप को आर्य बनाएं। यदि हमारे मन में और हमारे आचरण में आर्यत्व नहीं है तो हम वैदिक धर्म और आर्य समाज के विषय पर महर्षि दयानन्द का नाम लेकर जितने मर्जी भाषण दें उसका कोई प्रभाव दूसरों पर नहीं पड़ता है। इसके विपरीत यदि हम मन, वचन और कर्म से आर्य और वैदिक सिद्धान्तों के अनुयायी हैं तो हमारे थोड़े से शब्द भी कई लोगों के हृदयों में परिवर्तन कर सकते हैं। जो मनुष्य आर्यत्व से पूर्ण है वह यदि मौन भी रहे तो केवल उसके जीवन का दृष्टान्त भी दूसरों को आर्य बनाने के लिए पर्याप्त है। ऐसे व्यक्तियों का प्रभाव इतनी दूर तक जाता है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

जिन महानुभावों ने महर्षि के बोए हुए बीज को सींचकर इस रूप में पहुंचाने का श्रेय प्राप्त किया उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यही थी कि वे क्रियात्मक धर्म के नमूने थे। वे सच्चे और निर्भय थे। लोभ या लालच के कारण वे अपने पथ से विचलित नहीं होते थे। यदि किसी नगर या गांव में कोई ऐसा आर्य पुरूष होता था तो लोग उसे आदर की दृष्टि से देखते थे और उसके व्यवहार और सच्चे जीवन से प्रभावित होकर लोग आर्य समाज की ओर झुक जाते थे।

उस समय आर्य समाज का दायरा छोटा था आज बहुत बढ़ गया है। तब देश का वातावरण हमारे विचारों के प्रतिकूल तथा अब अनुकूल है। इस पर भी यदि हम यह अनुभव करते हैं कि हमारे प्रचार की शक्ति कम हो गई है, नवयुवक आर्य समाज की ओर कम झुकते या हमारा संगठन बिखर गया है तो इसका मुख्य कारण यही है कि समाजिक विस्तार के बढ़ जाने पर व्यक्तिगत जीवन की शुद्धता पर हमारा ध्यान नहीं रहा। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को अधिकाधिक शुद्ध प्रगतिशील और समन्वयात्मक बनाते रहें। साथ ही इनमें बाधक भीतरी और बाहरी तत्वों एवं रूढ़ियों से चाहे वे राजनीतिक हों वा साम्प्रदायिक हों सावधान रहकर उनके निराकरण में अपनी करनी और कथनी के द्वारा जुटे रहें।

हमारे पास मार्गदर्शन के लिए महर्षि दयानन्द जी द्वारा बताए गए सार्वभौमिक सिद्धान्त हैं। इन सिद्धान्तों को अपने जीवन के अन्दर अपनाकर हम अपने जीवन को आर्यत्व से पूर्ण बना सकते हैं। महर्षि दयानन्द की पवित्र भावना विश्व भ्रातृत्व, विश्व शान्ति, विश्व उन्नति और सृष्टि के सौंदर्य को बनाए रखने की कुंजी है। **-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री**

आर्य समाज शहीद भगत सिंह कालोनी में साप्ताहिक सत्संग

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर में साप्ताहिक सत्संग व हवन का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य यज्ञमान रसिक वर्मा एवं नेहा वर्मा ने यज्ञ में आहुतियां डालीं। यज्ञ के उपरान्त सोनू भारती आर्य समाज की भजन गायिका ने प्रभु भक्ति के भजन सुना कर सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया। आर्य समाज के रणजीत आर्य ने कहा कि आर्य समाज में हर रविवार को एक दम्पत्ति नित्य नया यज्ञ वेदी पर उपस्थित होकर अपने-अपने जीवन को सफल बना रहे हैं। आज नव दम्पत्ति जो आर्य समाज की वेदी पर उपस्थित हुआ है वह सौभाग्यशाली है जो अपना नव जीवन यज्ञ में आहुतियां प्रदान कर सभी का आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं। पंडित शिवा शास्त्री जी ने अपने प्रवचन में कहा कि हे परमेश्वर हम तेरी महिमा को कहां जान सकते हैं। तू महान है। तू ज्ञान में, कर्म में, शक्ति में, परिमाण में, सब गुणों में अति महान है, बहुत-बहुत बड़ा है। यह हम प्राय: सदा ही अनुभव करते हैं और इस अनुभव को मनुष्य साथियों में कई तरह से बखान भी करते रहते हैं। परन्तु हे प्रभो! हम तेरी सम्पूर्ण महिमा को कैसे समझ सकते हैं। हे मधवन्! हम तेरे मधवत्व को भी कहां जान सकते हैं। हे ऐश्वर्य वाले! हम तेरे ऐश्वर्यवत्व की तेरे ऐश्वर्यों की थाह भी कहां पा सकते हैं। संसार के कुछ ऐश्वर्यों को देखकर हम कल्पना करते हैं कि ऐसे ही कोई बड़े-बड़े दिव्य ऐश्वर्य भी होंगे और कल्पना करते हैं कि इसी तरह सब स्थानों में सब ब्रह्माण्डों में जो तेरे ऐश्वर्य बरस रहे हैं व अनन्त हैं। ईश्वर चन्द रामपाल, अशवनी डोगरा, चौ० हरी चन्द, भूपेन्द्र उपाध्याय, रमेश मुटरेजा, सुभाष आर्य, हर्ष लखन पाल, स्वर्ण शर्मा, विजयालक्ष्मी शर्मा, इन्दू आर्या, सुदर्शन आर्य, शिखा आर्य, राजेश वर्मा, सपना वर्मा, मनप्रीत शर्मा, मोहन लाल, राजीव शर्मा, सन्दीप मल्होत्रा, रमा शर्मा, हरविन्द्र सिंह बेदी, राकेश बावा, सरिता बावा, आशू, मितू, तिलकराज, विनोद तिवारी, अनिल मिश्रा, पवन शुक्ला, हरविन्द्र कौर, संगीता मल्होत्रा, दिव्या आर्य, वंश आर्य, गौरव आर्य, प्रिन्स शर्मा, रानी अरोड़ा, ओम प्रकाश मैहता, राजीव कुन्द्रा, उमादेवी शुक्ला, प्रियंका कुमारी, अर्चना मिश्रा इत्यादि।

thearyasamaj.org

भक्ति का स्वरूप

-ले० मनमोहन कुमार आर्य 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून

ईश्वर भक्ति ईश्वर की पूजा व उसका सत्कार है। भक्त अपने जिन कृत्यों से अपने अराध्य देव को प्रसन्न करने की चेष्टा करता है वह सब भक्ति के अन्तर्गत आता है। भक्त का अराध्य ईश्वर है जो चराचर जगत का स्वामी है। यह स्वामी भक्त की तरह एकदेशी न होकर सर्वव्यापक है। वह भक्त के साथ हर क्षण रहता है। अन्तर्यामीस्वरूप से भक्त के हर कृत्य को देखता व जानता है। यहां तक की भक्त के मन में जो भाव व विचार आते-जाते रहते हैं, उसका भी पूरा-पूरा ज्ञान ईश्वर को रहता है। भक्त कुछ सोच कर व निर्णय कर भूल सकता है परन्तु ईश्वर को सब कुछ स्मरण रहता है, वह कुछ भी भूलता नहीं है। अत: इन तथ्यों के जानकर भक्त को अपनी भक्ति का स्वरूप निर्धारित करना होता है। भगवान ने भक्त को बनाया है अथवा यह कह सकते हैं कि मनुष्य का जन्म दिया है। यह जन्म उसने दिया है तो इसका कुछ कारण तो अवश्य होगा। विचार करने व शास्त्रों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि यह सब हमारे प्रारब्ध के कारण होता है।

हमने पूर्व जन्मों में अच्छे व बुरे अथवा पुण्य व पाप कर्म किये होते हैं उनमें से जो कर्म व पाप-पुण्य भोगे जाने शेष होते हैं उनका भोग करने के लिए ईश्वर अपनी शाश्वत प्रजा- जीवात्माओं को जन्म अर्थात् जाति-आयु-भोग देता है। जाति से तात्पर्य मनुष्य, पशु व पक्षी आदि योनियां हैं। आयु से तात्पर्य जीवनकाल है तथा भोग से तात्पर्य सुख व दु:ख से है। इससे यह समझ में आता है कि सभी मनुष्यों को इस जीवन में अपने पूर्व अवशिष्ट कर्मों के फलों को भोगना है और नये श्रेष्ठ कर्मों को करके भावी जन्म व जन्मों के लिए प्रारब्ध में गुणात्मक वृद्धि अर्थात् पुण्यों की वृद्धि करनी हैं जिससे हमें कम से कम दु:ख भोगने पड़े और सुख की मात्रा हमारे कर्म-फल सिद्धान्त और श्रेष्ठ कर्मों का महत्व समझ में आने पर मनुष्य अपने से कुछ अधिक ज्ञानी धार्मिक मनुष्यों की संगति करता है और धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करता है। यह लोग बड़े भाग्यशाली होते हैं तो ढोंगी-पाखण्डी-अज्ञानी-स्वार्थी गुरुओं के चक्कर में न पड़कर किसी योग्य सद्गुरु को प्राप्त होते हैं जो अपने शिष्यों को सत्यपथानुगामी बनाता है। अधिकांश धार्मिक पुरुष जिन्हें धार्मिक गुरु कहते हैं, ऐसे हैं जो स्वयं ही ईश्वर भक्ति के सत्यस्वरूप से परिचित नहीं हैं। ऐसे पाखण्डी गुरुओं का अज्ञान के साथ अपना निजी हित व स्वार्थ भी होता है। वह भक्तों को गुमराह कर अपने जाल में फंसा लेते हैं जिससे भक्तों को जीवन का लक्ष्य, अर्थात् ईश्वर-साक्षात्कार, प्राप्त होने के स्थान पर सह सत्य मार्ग से दूर हो जाते हैं। अत: गुरु चयन के मार्ग में खतरे बहुत ज्यादा हैं। इसके स्थान पर यदि भक्तजन घर में रहते हुए सत्यार्थ प्रकाश, पंचमहायज्ञविधि, संस्कारविधि, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्याभिविनय, ग्यारह उपनिषद्, छ: दर्शन और महर्षि दयानन्द व आर्य विद्वानों के वेद भाष्यों का अध्ययन करें तो इससे भक्ति क्षेत्र में बहुत लाभ होता है। भक्ति और ईश्वर की उपासना दोनों समानार्थक शब्द हैं। भक्ति उपासना की विरोधी न होकर सहयोगी या पूरक है। भक्ति में भी उपासना निहित होती है। सच्ची भक्ति के लिए भक्तों को योग दर्शन के भाष्यों का अध्ययन करना चाहिये। इसके लिए पं. उदयवीर शास्त्री, महात्मा नारायण स्वामी जी आदि आर्य विद्वानों के योगदर्शन के हिन्दी भाष्य सहायक हो सकते हैं। इसके साथ ही दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड, साबरकाण्ठा, गुजरात से प्राप्य बृहति ब्रह्म मेधा-तीन भाग ग्रन्थ भी बहुत उपयोगी है। यदि भक्ति मार्ग के पथिक इन ग्रन्थों का अध्ययन करेंगे तो उन्हें इनसे बहुत लाभ हो सकता है।

भक्ति के नाम पर आजकल कुछ अन्धविश्वास भी प्रचलित हैं। बहुत से लोग परम्परागतरूप से देवों की मूर्तियों की पूजा करते हैं। इस मूर्तिपूजा का आधार अवतारवाद का अवैदिक सिद्धान्त है। ईश्वर अजन्मा, निराकार व सर्वव्यापक होने के कारण अवतार नहीं ले सकता और न ही अवतार की उसे किंचित भी आवश्यकता है। यह मूर्तिपूजा हिन्दुओं ने जैनियों का अन्धानुकरण कर आरम्भ की थी। बौद्ध और जैनियों से पूर्व भारत में मूर्तिपूजा का नाम व निशान भी नहीं था। अत: शुद्ध भक्ति का मूर्तिपूजा से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। मूर्तिपूजक भक्त नाना प्रकार के अनुष्ठान व कर्मकाण्ड करते हैं।

वस्तुत: यह भक्ति न होकर भक्ति का एक विकृत रूप होता है। भक्ति तो ईश्वर की प्राप्ति, आत्मसाक्षात्कार व ब्रह्म साक्षात्कार के लिए किए जाने वाले ज्ञान व विवेक पूर्वक कृत्य है तो अष्टांग योग के अन्तर्गत आता है। इसके लिए यम व नियमों का पालन अनिवार्य है। पांच यम अर्थात् अंहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह तथा पांच नियम शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान हैं। इनका जीवन में पूरी तरह आचरण करना आवश्यक व अनिवार्य है। यदि यम व नियमों के पालन में किंचित भी शैथिल्य होगा तो भक्ति फलीभूत नहीं होगी। अत: इसे प्रात: व सायं सन्ध्या में बैठकर परीक्षक की भांति प्रात: की सन्ध्या में अपने पूर्व दिन व सायं की सन्ध्या में उससे पूर्व दिन भर के कार्य कलापों का परीक्षण करना चाहिये। और देखना चाहिये कि क्या हमने यम व नियमों का पूरी तरह से पालन किया है अथवा नहीं। आसन व प्राणायाम शरीर को स्वस्थ रखने व मन को एकाग्र करने के लिए किए जाते हैं। प्रत्याहार व धारणा भी ईश्वर का स्थिर होकर ध्यान करने में सहायक होते हैं। यदि योग के 6 अंगों को साध लिया तो फिर ध्यान व साधना को सिद्ध करना आसान व सम्भव हो जाता है। ऐसा वैदिक विद्वानों व साधकों का मत है। हमारा अध्ययन व ज्ञान यह बताता है कि योग दर्शन के अनुसार योग के आठ अंगों का पालन करते हुए ईश उपासना को ही सच्ची भक्ति कह सकते हैं।

भक्ति का एक स्वरूप यह भी हो सकता है कि ईश्वर के सत्य स्वरूप को जानकर उसके विचार, चिन्तन, स्तुति, प्रार्थना व निरन्तर ध्यान आदि में अपना अधिकांश समय व्यतीत करना। इससे लाभ यह होता है कि दिन-प्रतिदिन हमारे दोषों का शमन होने लगता है एवं भक्ति करने के समय में ईश्वर के सान्निध्य से ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभावानुसार भक्त के गुण-कर्म-स्वभाव सुधरते जाते हैं। ऐसा होने पर भक्त की अपने अराध्य से निकटता बढ़ जाती है। भक्त जितना अधिक ईश्वर का विचार-चिन्तन-स्तुति-प्रार्थना-ध्यान-उपासना आदि करेगा उतनी ही उसकी निकटता ईश्वर से हो जायेगी और ऐसी स्थिति में उसे ईश्वर का अहसास व अनुभव भी औरों की तुलना में उस भक्त को कहीं अधिक हो सकता है। हम समझते हैं कि यह स्थिति समाधि प्राप्त योगी की तुलना में समाधि के निकट की अवस्था हो सकती है। सभी जिज्ञासु भक्तों, उपासकों व अध्यात्म प्रेमियों को इस प्रकार से भक्ति साधना कर ज्ञान साधना के समान ही ईश्वर को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये। यह ध्यान रहे कि भक्ति यदि विवेक पूर्ण होगी तो फलदायक होगी और विवेकरहित भक्ति को अन्धविश्वास ही कह भक्ति ईश्वर को अपने स्तुति वचनों व आचरण से प्रसन्न करने को कहते हैं। अत: सच्चा भक्त ईश्वर की स्तुति के गीतों व प्रार्थनाओं को ईश्वर से मन ही मन कह कर व उस ईश्वर से अपना स्वरूप प्रकाशित करने की प्रार्थना कर अपनी भक्ति को सफलता व सिद्धि के सोपान तक पहुंचा सकते हैं। ईश्वर के गुणों का वर्णन और प्रार्थना के भजन गाने से भी भक्त ईश्वर से जुड़ा रहता है। इसका भी उपयोग भक्ति में किया जा सकता है।

thearyasamaj.org

दयानन्द तो दयानन्द ही था!

-ले० सत्यपाल आर्य एम. ए. एल. एल. बी. (आनर्स) हिसार

भारतवर्ष में उन्नीसवीं शताब्दी जनजागरण का काल है। इस काल में उच्च से उच्च, महान से महान अनेक महामानवों ने जन्म लिया है। उनमें से स्वामी दयानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व, कर्तृत्व, नेतृत्व, देश-धर्म सेवा, वेदोद्धार, समाज सुधार संस्कार आदि अपनी महिमा से अलग ही स्थान रखते हैं।

योगीराज अरविन्द के शब्दों में- ''सभी महापुरुष पर्वतशिखिरों की भान्ति अपनी छटा, अपनी आभा, अपनी सुन्दरता अलग-अलग रूपों में प्रकट करते हैं। सभी एक दूसरे से भिन्न, मनोहर, मनोरम, दर्शनीय प्रतीत होते हैं। किन्तु इन सब उत्तंग श्रृंगों में सबसे उन्नत गौरीशंकर के समान है अप्रतिम, अद्‌भुत, अपूर्व महर्षि दयानन्द का बहुआयामी व्यक्तित्व। निराला, विचित्र, ब्रह्मचर्य से उद्दीप्त, तपस्या से कुन्दन, आर्षज्ञान से प्राञ्जल, स्वर्णाभिराम, वर्णनातीत है उनका जीवन।''

ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी में जन्म लेकर जिन जिन महापुरुषों ने भारतीय राष्ट्र, धर्म, समाज, संस्कृति की अपूर्व सेवा की है उनमें दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती के परम शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम अनन्यतम है।

''स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824-83) उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रारम्भ हुए भारतीय पुनर्जागरण युग के महान युग निर्माताओं में से एक हैं। वे केवल एक सुधारक मात्र ही नहीं थे जिन्होंने भारतीय समाज व धर्म सुधार का एक प्रबल आन्दोलन आरम्भ किया वरन् वे एक प्रगतिवादी चिन्तक, दार्शनिक व मनीषी थे''

''स्वामी जी महाराज पहले महापुरुष थे, जो पश्चिमी देशों के मनुष्यों के भी गुरु कहलाए, जिनको अनेक पश्चिमी मनुष्य गुरु आचार्य और धर्मपिता मानते थे।''

जिस युग में स्वामी जी हुए हैं, उनसे अनेकों वर्ष पहले से आज तक ऐसा एक ही पुरुष हुआ है जो विदेशी भाषा नहीं जानता था, जिसने स्वदेश से बाहर एक पैर भी नहीं रखा था, जो स्वदेश के अन्न जल से पला था, जो विचारों से स्वदेशी था, जो आचारों से स्वदेशी था, भाषा और वेश में स्वदेशी था, किन्तु वीतराग और परम विद्वान् होने से सबका भक्ति भाजन बना हुआ था, जिसका देशी, विदेशी सभी मान करते थे। ऊँचे से ऊँचे राजे महाराजे जिसका सम्मान करते थे, वह पुरुष महर्षि दयानन्द ही था। महर्षि को छोड़कर भारत के इस युग में एक भी पुरुष ऐसा नहीं हुआ, जिसने विदेशी भाषा न सीखी हो अथवा विदेश यात्रा न की हो और फिर भी स्वदेश में सम्मानित हुआ हो।

''स्वामी दयानन्द जी महाराज के जीवन का मुख्य कार्य धर्म प्रचार था, आर्यों के धर्म को सर्वोत्तम, सबसे पुरातन और ईश्वर प्रदत्त मानते थे। आत्मज्ञान आर्य धर्म की प्रधानता का सूचक है। आत्मज्ञान से आर्यों का पहले भी उत्कर्ष हुआ है। इस तत्व के पाठ इन्होंने सब जातियों को पढ़ाये हैं, इसमें ये सारे संसार के शिक्षक रहे हैं और अब भी हैं।''

इस आत्मज्ञान के मूल स्त्रोत ईश्वर प्रदत्त वेद हैं। वेद से ही इस तात्विक ज्ञान का नि:सरण हुआ है। इसीलिए श्री स्वामी जी की वेद में अपार भक्ति थी। वे पक्के वेदानुयायी थे। वेद विश्वास और वेद की अपौरूषेयता को स्थगित कर वे किसी से कभी भी सन्धि करने को उद्यत न थे।

''महाराज का परमात्मदेव में परम विश्वास था। वे ईश्वर तत्व पर पूरा भरोसा रखते थे। उसी जगदीश की शान्त शरण में रहते हुए वे विपत्ति वज्रपात से भी घबराते नहीं थे। महाराज वेद विश्वास की भांति ईश्वर विश्वास के भी पक्के थे। वेदाज्ञा और एक निराकार ईश्वर भक्ति धर्म के ये दो अंग सार्वजनिक थे। इसी केन्द्र पर सारी जातियों को लाने के लिए आजीवन सचेष्ट रहे।''

वे प्राचीनता की दुर्गा के अनन्य प्रेम से पक्के पूजक थे। आर्यों का अतीत काल, उनको स्वर्णिम आचारों और स्वर्णिम विचारों से समावृत्त, स्वर्ण स्वरूप प्रतीत होता था। आर्यों की पुरानी सभ्यता की अवहेलना को कदापि सहन नहीं कर सकते थे। उनका निश्चय था कि नवीन मतों ने, महन्तों ने और मठों ने पुरातन काल की महत्ता पर मिट्टी डाल दी है।

''महाराज सार्वजनिक हित के लिए ही हाथ में तर्क का तीर लेकर खण्डन के भूखण्ड में उतरे थे। रोगी के फोड़े फुन्सियों का जब तक छेदन न किया जाये, उसका स्वस्थ होना दुष्कर है। खेतों में से जब तक झाड़ झखाड़ उखाड़ कर, घास फूस निकाल कर इसका शोधन न किया जाए उसमें खेती का सुफलित होना असम्भव है। ऐसे ही किसी देश और जाति में से जब तक कुरीतियों को दूर न किया जाए और उसके आचार विचार का संशोधन न हो, तब तक उसकी उन्नति के सोपान पर पदार्पण करना महाकठिन है। सुधार का कार्य सर्वप्रिय तो नहीं, परन्तु सार्वजनिक हित से पूर्ण अवश्य हुआ करता है। खण्डन खड्ग का अवलम्बन करते समय भी महाराज के महान हृदय में परहित पूर्ण ही रहा था।''

स्वामी जी महाराज ने सामाजिक-सुधार में ब्रह्मचर्यावस्था पालन करना अत्यावश्यक बताया है। एक-एक दो-दो वर्ष के बालकों का विवाह करना देश का अध:पतन बताया है।

''उन्होंने वर्णाश्रम व्यवस्था को गुण कर्म के अनुसार माना है। किसी जाति के जन का उत्तम तथा निकृष्ट होना जन्म और नाम से नहीं मानते थे।''

''महाराजा शूद्रों के सुधार के बड़े पक्षपाती थे। उन्हें भी सर्जनकर्त्ता की सर्वश्रेष्ठ कृति समझते थे। चतुर्थ वर्ण से घृणा करना, उसे अस्पृश्य समझना उनके निकट मनुष्य पदवी से गिरा हुआ कर्म है। जो लोग कुत्तों को छूते हैं, बिल्लियों से खेलते हैं, भैसों को हाथ लगाते हैं, ऊँटों को स्पर्श करते हैं, घृणित से घृणित जीव जन्तुओं को भी छू लेते हैं और अपने हाथ से पशुओं के चमड़े का बना जूता पहन व उतार लेते हैं, वे मनुष्यों को अछूत समझ उससे दूर भागा करें, यह कितना अन्याय है, अधर्म है, महाराजा शूद्रों को वेदाधिकार देते हुए लिखते हैं, जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि सब पदार्थ सबके लिए बनाए हैं, वैसे ही वेद भी सब मनुष्यों के लिए प्रकाशित किए हैं।''

''श्री स्वामी जी ने स्त्री जाति के सुधार का भी परम कार्य किया है। शास्त्र रीति से उनको भी वेदाधिकार दिया है। महाराज स्त्री शिक्षा एवं स्त्रियों का महत्त्व वर्णन करते हुए लिखते हैं-''स्त्रियों को भी ब्रह्मचर्य धारण और विद्या ग्रहण अवश्य करना चाहिए। भारत की स्त्रियों में भूषण रूप गार्गी आदि देवियों शास्त्रों को पढ़कर पूरी विदूषी हुई हैं।'' देखो, आर्यावर्त्त में राजपुरुषों की स्त्रियां धनुर्वेद, युद्ध विद्या अच्छी प्रकार जानती थी। यदि ऐसा न होता तो कैकेयी आदि स्त्रियां दशरथादि राजाओं के साथ संग्राम में कैसे जा सकती थी? स्त्रियों को व्याकरण, धर्म, वैध गणित और शिल्प विद्या अवश्य सीखनी चाहिए।''

''श्री स्वामी जी महाराज से भारतवासियों की दरिद्र दशा छिपी न थी। उन्होंने अपने विस्तृत पर्यटन में अकाल पीड़ित देशवासियों की करूणाजनक अवस्था को अपनी आँखों से देखा था। उनके हृदयबोधक रोदन व करुण क्रन्दन को अपने कानों से सुना था। श्री स्वामी जी यह भी मानते और जानते थे कि भारत भूमि रत्नगर्भा है, सुजला है, सुफला है। ऊसर नहीं किन्तु उर्वरा और सस्यशालिनी है।''

''फिर भी यहाँ भूख, दुर्भिक्ष और अभाव क्यों है? इसका कारण शिल्पकला का भारी अभाव है। विदेशी वस्तुओं की भरमार से यहां के लाखों परिश्रमी निकम्मे व बेरोजगार हो रहे हैं। उनके जीवन के अन्तिम वर्षों में उनके धर्मप्रचार और समाज सुधार आदि उदात्त उद्देश्यों से भारतवर्ष में शिल्पकला विस्तारित करना भी सम्मिलित हो गया था। स्वामी जी जहाँ देशवासियों की आत्मिक भूख प्यास को वेदोपदेश द्वारा दूर करते थे, वहाँ उनकी शारीरिक क्षुत्पिपासा को उपराम करने के लिए शिल्पकला के सुदृढ़ सूत्रपात भी कर रहे थे।''

(शेष पृष्ठ 6 पर)

thearyasamaj.org

बोध-प्रदीप

-देव नारायण भारद्वाज

मत भटक मनुज अँधियारे में स्वागत करता उजियारा है।
सत्यार्थ प्रकाश का प्रदीप, ऋषि दयानन्द ने वारा है॥

(१)

सत्यार्थ प्रकाशक मार्तण्ड, चौदह लोकों में जाता है।
जग एक नीड़ के मनुज एक, श्रुति समुल्लास बिखराता है।
सच्चिदानन्द परमेश्वर का, सच्चा स्वरूप बतलाया है।
नित पञ्च यज्ञ आयोजन से, परिवार तीर्थ बन जाता है।
क्यों तकते फिरते चिनगारी, पास तुम्हारे श्रुति तारा है।
सत्यार्थ प्रकाश का प्रदीप, ऋषि दयानन्द ने वारा है॥

(२)

महाकुम्भ में महाघोष कर, पाखण्ड खण्डिनी फहराई।
अद्य आडम्बर पीड़ा हरकर, वैदिक रवि की राह दिखाई।
नर बाल युवा सधवा विधवा, थी सब पर ही की करुणाई।
यम नियम साधना सेवा की, सबको ही दे दी शरणाई।
श्रुति रोधक मत पन्थ सभी को, शास्त्रार्थों में ललकारा है।
सत्यार्थ प्रकाश का प्रदीप, ऋषि दयानन्द ने वारा है॥

(३)

खेद भेद की ओर न जाओ, वेदों की ओर लौट आओ।
क्षण, छोड़ों साथ दानवों का, देवों की ओर लौट आओ।
आतंकवाद का कर विनाश, संप्रीतिवाद को अपनाओ।
मर रही जहाँ मानवता हो, प्राणों से उसको दुलराओ।
द्रोही ने जिसको दुत्कारा, श्रुति स्नेही ने पुचकारा है।
सत्यार्थ प्रकाश का प्रदीप, ऋषि दयानन्द ने वारा है॥

(४)

पादप पशुओं पर दया करो, वे भी कल्याणी प्राणी है।
देते निज पोष मनुजता को, दुःख सुख में प्रिय परित्राणी है।
गो करुणा निधि का ध्यान करो, महर्षि की अद्भुत वाणी है।
मत मारो मूक प्राणियों को, वे सहयोगी निर्माणी हैं।
हिंसक स्वभाव का हर मानव, मानवता का हत्यारा है।
सत्यार्थ प्रकाश का प्रदीप, ऋषि दयानन्द ने वारा है।

(५)

बेटा-बेटी भेद भावना, लज्जित करती मानवता को।
भ्रूण हनन दहेज बलात्कार, इंगित करते दानवता को।
प्रभु ने निज पुत्र बना भेजा, समझो अपनी उत्तमता को।
अपनी अवलोक प्रतिष्ठा लो, नर जीवन की उज्ज्वलता को।
मानव मानव सभी सहोदर, वसुधैव कुटुम्ब तुम्हारा है।
सत्यार्थ प्रकाश का प्रदीप, ऋषि दयानन्द ने वारा है।

(६)

हर बाल-बालिका का पालन, अभिद्रक्षा हो उनकी समान।
सुविधा साधन के साथ साथ, सब शिक्षा हो उनकी समान।
प्राप्त दीक्षा-दक्षतानुसार, निज राष्ट्र-तंत्र में मिले मान।
कैलाश-मलाला, नोबेल जय, यह दयानन्द का कीर्ति गान।
निज प्राणों पर खेल जिन्होंने, ऋषि का नारा हुंकारा है।
सत्यार्थ प्रकाश का प्रदीप, ऋषि दयानन्द ने वारा है।

(७)

वेदों के भ्रमित भाष्यों का, अनुकूलन करके दिखलाया।
भारत माँ के स्वातत्र्य हेतु, डंका स्वराज्य का बजवाया।
वेद विश्व की बने धरोहर, राष्ट्र संघ में 'योग' समाया।
भारत विश्व गुरू पद पाये, भूमिका भाव यह उग आया।
भारत माँ के यश गुञ्जन का, उद्घोष स्त्रोत टंकारा है।
सत्यार्थ प्रकाश का प्रदीप, ऋषि दयानन्द ने वारा है॥

पृष्ठ 2 का शेष-ऋग्वेद में राजा.....

असिकन्यां यजमानो न होता॥

-ऋ. 4.17.15

पदार्थ- जो राजा (यजमानः) मेल करने वाले के (न) समान (अस्किन्याम्) रात्रि में भयरहित (होता) सुख का देने वाला होवे वह निरन्तर आनन्द करें।

क्षियन्तं त्वमक्षियन्तं कृणोतीयर्त्ति रेणुं मधवा समोहम्। विभञ्जनुरशनिमाँ इव द्यौरूत स्तोतारं मधवा वसो धात्॥

-ऋ. 4.17.13

पदार्थ-हे राजन्। जैसे (मधवा) अत्यन्त धनवान पुरूष (स्तोतारम्) यज्ञ करने वाले को (वसौ) धन में (धात्) धारण करता है वैसे ही जो (द्यौः) प्रकाश के समान (उत) और भी (अशनि-मानिव) बहुत शस्त्र और अस्त्र वाले के समान (विभञ्जनुः) शत्रुओं का नाश करता हुआ (मधवा) श्रेष्ठ धनवान पुरूष (क्षियन्तम्) निवास करते और (अक्षियन्तम्) नहीं निवास करते हुए को (कृणोति) स्वीकार करता है (समोहम्) उत्तम प्रकार से छिपे हुये (रेणुम्) अपराध को (इयर्ति) प्राप्त होता है उसको (त्वम्) आप शिक्षा दीजिए।

भावार्थ-राजा से कहा गया है कि जो भी व्यक्ति अपराध करे उसे बिना दण्ड दिये न छोड़े तथा श्रेष्ठ जनों का वैसे सत्कार करे जैसे यज्ञ में यजमान विद्वानों का सम्मान करता है। राजा का यह पहला कर्त्तव्य है कि धूर्तो से प्रजा की रक्षा करें।

पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराव्णः। पाहि रीषत उत वा जिंघासतो बृहद्भानो यविष्ठय॥ -ऋ. 1.36.15

पदार्थ-हे तेजस्वी तरूण। अवस्था युक्त राजन्। आप धूर्त, कपटी, कृपण हिंसक दुष्ट मनुष्यों से हमको बचाइये। सबको दुःख देने वाले मनुष्य से हमें पृथक् रखिये और मारने की इच्छा करने वाले शत्रु से हमारी रक्षा कीजिए।

प्रजा श्रेष्ठ शासक का सम्मान करती है और उसे मांगलिक कार्यों में नियंत्रित करके प्रसन्नता अनुभव करती है। प्रजा स्वागत में कहती है-

कस्ते मद इन्द्र रन्त्योभूद् दुरो गिरो अभ्यु ग्रोविधान्।

कद्वाहो अ[illegible]ुप मा मनीषा आ त्वा शक्यामुपमंरा[illegible] अन्ने॥

-ऋ. 10.29.3

भावार्थ-प्रजाजन कहते हैं कि हे राजन् आपको कौन सा खाद्य पदार्थ प्रिय है। मेरा यह मनोरथ कब पूरा होगा कि अपने पास स्थित हुए तुम्हारी अन्नादि से सेवा करूँ। समृद्धियों का देने वाले तुम कब हमारे घर आवोगे। इति शम्।

पृष्ठ 5 का शेष-दयानन्द तो दयानन्द.....

"स्वामी दयानन्द ने शिक्षा सुधार पर सबसे अधिक बल दिया है। वे जानते थे कि जब तक सर्वसाधारण में सुशिक्षा का प्रचार नहीं होता, तब तक उन्नति नहीं हो सकती। करोड़ों मनुष्यों को एक उद्देश्य पर लाने के लिए शिक्षा सबसे ऊँचा साधन है। वह शिक्षा भी धर्मसहित और जातीय होनी चाहिए।"

ऐसे समय में जबकि मैकाले की शिक्षा नीति की बदौलत भारत का युवक पढ़ लिखकर देश, धर्म, संस्कृति से कटता जा रहा था, स्वधर्म को हेय मानकर तिलाञ्जलि देकर ईसाईयत के जाल में फंसता जा रहा था, स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने कालजयी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सम्पूर्ण दूसरा समुल्लास शिक्षा नीति को समर्पित किया है। तीसरे समुल्लास सहित उनके व्याख्यानों, लेखों, वेदभाष्य आदि समस्त ग्रन्थ शिक्षा नीति से अछूते नहीं हैं।

सबके लिए समान अवसर, समान सुविधा, समान व्यवस्था की वकालत करने वाले स्वामी युग के प्रथम आचार्य थे। सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में लिखते हैं-

"सबको तुल्य वस्त्र, खानपान, आसन दिए जाए चाहे वह राज कुमार हो वा राजकुमारी और चाहे दरिद्र की सन्तान हो"

स्वामी दयानन्द का शिक्षा दर्शन जातिपाति, छुआछूत और अमीर गरीब के बीच की खाई की सम्भावना को ही जड़मूल से नष्ट कर देता है।

अनिवार्य शिक्षा के विषय में स्वामी दयानन्द लिखते हैं- "राजा को योग्य है कि वह सब कन्या और लड़कों को उक्त समय से उक्त समय तक ब्रह्मचर्य में रखकर विद्वान् कराना। जो कोई इस आज्ञा को न माने तो उसके माता-पिता को दण्ड देना, अर्थात् राजा की आज्ञा से आठ वर्ष के पश्चात् लड़का और लड़की किसी के घर में न रहने पावे किन्तु आचार्य के कुल में रहे, जब तक समावर्तन का समय न आवे तब तक विवाह न होने पावें।"

स्वामी दयानन्द ने अनायास बाल श्रम, बाल विवाह, अनेक विवाह, बन्धुआवृत्ति, अशिक्षा, जाति पाति छुआछूत आदि सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने का रास्ता दिया है। स्वामी दयानन्द सहशिक्षा के परम विरोधी थे। वे स्वयंवर विवाह के पक्षपाती थे। वर्णव्यवस्था लागू करके उन्होंने श्रम और सम्पत्ति के अधिकारों की क्रान्तिकारी व्यवस्था प्रदान की है।

आज आवश्यकता है समाज की सड़ी गली व्यवस्था को बदलने के लिए स्वामी दयानन्द के जीवन दर्शन पर चिन्तन और आचरण की।

thearyasamaj.org

आर्य समाज, बरनाला द्वारा महर्षि दयानन्द बोध-उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बरनाला द्वारा दयानन्द केन्द्रीय विद्या-मंदिर के प्रांगण में समस्त आर्य शिक्षण-संस्थाओं की शमूलियत एवं सहयोग से प्रधान-डॉ. सूर्यकान्त शोरी जी की प्रधानगी में दिनांक: 16.02.2015 दिन सोमवार को प्रात: 9:30 से 12:00 बजे तक महर्षि दयानन्द सरस्वती बोध-उत्सव श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। बरनाला की सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों एवं स्टाफ वर्ग को इसमें आमंत्रित किया गया था। पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री के कुशल नेतृत्व में अग्नि होत्र सम्पन्न किया गया। तत्पश्चात सभी संस्थाओं के छात्र/छात्राओं द्वारा भजन/भाषण आदि प्रस्तुत किए गए। श्री राम चन्द्र आर्य एवं श्रीमती रज्जना मैनन ने अवसर अनुकूल सुमधुर भजनामृत द्वारा उपस्थित श्रोताओं को निहाल कर दिया। श्री भारत भूषण मैनन, श्री राम कुमार सोबती, श्री राम शरणदास गोयल, श्रीमती अनीता मित्तल ने अपने सम्बोधन में ऋषि-संदेश से अवगत करवाया। अन्त में डॉ. सूर्य कान्त शोरी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करने के लिए प्रेरित किया और समस्त उपस्थित श्रोताओं का धन्यवाद किया। मंच का संचालन पूर्ण कुशलता से श्री गुरविन्दर शर्मा जी ने किया। प्रतियोगी छात्र/छात्राओं को पारितोषिक प्रदान कर शांति पाठ एवं प्रसाद वितरण द्वारा उत्सव सम्पन्न हुआ।

-तिलक राम मन्त्री, आर्य समाज बरनाला

महर्षि का जन्म दिवस मनाया

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड़ लुधियाना में 16-2-15 को शिवरात्रि एवं स्वामी दयानन्द जी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ किया गया। जिसे श्री योगराज शास्त्री जी ने बड़े मनोयोग से करवाया। जिसमें योगराज शास्त्री जी ने बच्चों को स्वामी दयानन्द जी के जीवन के बारे में विस्तार से बताया। जब शिवरात्रि के व्रत पर शिवलिंग पर चूहे को उछलकूद करते देखा तो उनके मन में हलचल हुई कि यह सच्चा शिव नहीं हो सकता जो चूहों से अपनी रक्षा नहीं कर सकता वह दूसरों की रक्षा कैसे करेगा। यह घटना देख वह घर छोड़ कर सच्चे शिव की खोज में चल पड़े और स्वामी दयानन्द जी ने केवल अपने कल्याण एवं मोक्ष की ओर का रास्ता न चुन कर समाज में से सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का रास्ता चुना और अकेले ही सारी परिस्थितियों का सामना करते हुए सामाजिक कुरीतियों को दूर किया। नारी जाति को वेद सुनने सुनाने एवं शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार न था। आज की नारी शिक्षा में जो इतनी आगे पहुँच गई है वह सब महर्षि दयानन्द जी की ही देन है। इसके पश्चात् शास्त्री जी ने दसवी कक्षा के विद्यार्थियों की दसवीं की परीक्षा में अच्छे अंक लेने का आशीर्वाद दिया और समझाया कि विद्यार्थी की एकाग्रचित होकर लगन से पढ़ने पर ही सफलता प्राप्त होती है। अन्त में शान्तिपाठ के पश्चात् सबको यज्ञ शेष बांटा गया।

-सुनीता मलिक

गुरुकुल आश्रम आमसेना का 48वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

ओड़िशा में आर्यों के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल गुरुकुल आश्रम आमसेना के 48वें वार्षिक महोत्सव पर दो होनहार युवक ब्रह्मचारी अंकित कुमार एवं ब्रह्मचारी महीधर आर्य ने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर अपना जीवन देश धर्म के लिए समर्पित किया तथा श्री स्वर्गीय चौ. मित्रसेन जी आर्य की पुण्य स्मृति में पूज्य स्वामी सुधानन्द जी सरस्वती, पूज्य डॉ. ब्रह्ममुनि जी वानप्रस्थी (महाराष्ट्र), महात्मा चैतन्यमुनि जी (हिमाचल प्रदेश) का सम्मान 21 हजार रुपए की राशि, शॉल, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र के साथ किया गया। इसी क्रम में 30 वानप्रस्थियों एवं 16 आर्य वृद्धों तथा गुरुकुल में दीक्षित ब्रह्मचारियों के माता-पिता का सम्मान भी किया गया। महोत्सव का शुभारम्भ अथर्ववेद परायण महायज्ञ तथा ओ३म् पताकोत्तलन के साथ हुआ। खरियार रोड नगर में भव्य शोभायात्रा भी निकाली गई। इसी अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वानों के उद्बोधन के साथ महोत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री सुदर्शन भगत जी एवं स्थानीय विधायक श्री बसंत भाई पण्डा जी भी महोत्सव में जनता को सम्बोधित करने के लिए पधारे थे।

-डॉ. कुञ्जदेव मनीषी

एथलैटिक्स मीट का आयोजन

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड़ लुधियाना में 2 दिवसीय एथलैटिक्स मीट का आयोजन किया गया। इस दौरान बच्चों की ओर से सांस्कृतिक प्रोग्राम को पेश किया गया। स्कूल की प्राइमरी व हाई क्लास के विद्यार्थियों ने नृत्य पेश कर दर्शकों का मन मोह लिया।

स्कूल की प्रिंसीपल सुनीता मलिक और मुख्यातिथि गोपाल कृष्णा अग्रवाल ने बच्चों के उत्साह को बढ़ाया। कार्यक्रम में सैक रेस, बैक रेस, लैमन-स्पून रेस आदि करवाई गई। सांस्कृतिक कार्यक्रम में ग्रुप सांग मिक्स गाने व डांस आदि करवाया गया। इसके पश्चात् स्पीच व गीत पेश किए गए। विजेताओं को मैडल दिए गए। गोपाल कृष्ण अग्रवाल और स्कूल के प्रधान सन्त कुमार आर्य की ओर से मीट का समापन राष्ट्रीय गान से किया गया।

-सुनीता मलिक

स्वामी दयानन्द जी का जन्म दिवस मनाया

दिनांक 15 फरवरी 2015 दिन रविवार को आर्य समाज मन्दिर बंगा के प्रांगण में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: ठीक 8.30 बजे संसार का श्रेष्ठतम कर्म अग्निहोत्र यज्ञ रचाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री श्याम लाल आर्य पुरोहित आर्य समाज बंगा थे। सभी उपस्थित नर नारीयों एवं बच्चों ने बड़ी श्रद्धा एवं विश्वास के साथ यज्ञ में पवित्र वेद मन्त्रों का पाठ करते हुए आहुति अर्पण की।

हवन यज्ञ के पश्चात् ऋषि दयानन्द सिलाई स्कूल की छात्राओं ने स्वामी जी को याद करते हुए सुन्दर भजन गाए। श्री श्याम लाल आर्य ने ऋग्वेद मंडल चार सूक्त 15 को पढ़कर सुनाया। इस प्रोग्राम के मुख्य वक्ता श्री शादी लाल महेन्द्र प्रधान आर्य समाज बंगा ने महर्षि स्वामी दयानन्द के जीवन पर व्याख्यान देते हुए बताया कि स्वामी जी ने अपना तन, मन, धन वेद प्रचार में लगा दिया। उन्हें जीवन में 17 बार जहर दिया गया। दुष्ट एवं स्वार्थी लोगों ने उन पर ईंट, पत्थर एवं शास्त्रों से प्रहार किए। परन्तु स्वामी जी अपने मिशन एवं वेद प्रचार पर अडिग रहे। उन्होंने बताया कि स्वामी जी ने भारत वर्ष एवं संसार में फैली कुरीतियों एवं बुराइयों एवं भारत की अधोगति के कारणों पर गहन चिन्तन एवं मंथन किया और इन सब का इलाज वेद प्रचार ही बताया एवं अपना सारा जीवन संसार के भलाई के लिए वेद प्रचार में ही लगा दिया। हम सब को ऋषि द्वारा बतलाए मार्ग पर चलना चाहिए। यज्ञ शेष बांटा गया। आर्ष साहित्य बांटा गया। प्रोग्राम अत्यन्त सफल रहा।

2. बंगा शहर के निकट गांव पूनियां में बाबा अलक राम की समाधि पर आर्य समाज बंगा द्वारा दिनांक 15.2.2015 को ठीक 11 बजे हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा जी श्याम लाल आर्य पुरोहित आर्य समाज बंगा थे। यज्ञ के सुअवसर पर पूनीयां गांव के काफी संख्या ने नर नारी, बाल वृद्ध उपस्थित थे। सभी ने बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति से यज्ञ में पूर्णाहुति डाली और श्रद्धा दिखाई। यज्ञ में हर वर्ग के व्यक्ति पधारे हुए थे। इस सुअवसर पर डाक्टर राजेश शर्मा, प्रिंसीपल जगमोहन गुणाचौर, जत्थेदार जसवन्त सिंह, मास्टर सुखविन्दर सिंह, श्री जसवन्त सिंह जत्थेदार, प्रिंसीपल बृजमोहन, रानी सेवादार एवं अन्य महानुभावों ने प्रोग्राम में उपस्थित होकर यज्ञ की शोभा को बढ़ाया। अन्त में डॉ. राजेश शर्मा गांव पूनीयां ने सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। शान्ति पाठ के पश्चात् यज्ञ शेष वितरण किया गया। आर्य साहित्य बांटा गया। प्रोग्राम अत्यन्त सफल/हवन यज्ञ के पश्चात् लंगर लगाया गया। लंगर देर सायं काल तक चलता रहा।

-नरेन्द्र कुमार गोगना, मंत्री आर्य समाज बंगा

thearyasamaj.org

आर्य समाज भार्गव नगर जालन्धर में ऋषि बोधोत्सव का कार्यक्रम मनाया गया

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर के वार्षिक ऋषि बोधोत्सव का कार्यक्रम 11 फरवरी से 17 फरवरी 2015 तक धूमधाम से मनाया गया। 11 फरवरी से 16 फरवरी तक वेद कथा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य महावीर मुमुक्षु के प्रवचन तथा श्री जगत वर्मा भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजन हुए। इन दोनों ने प्रभावी ढंग से श्रोताओं को वेद के आधार पर प्रवचन व भजनों के द्वारा लाभान्वित किया।

ऋषि बाधोत्सव का मुख्य कार्यक्रम 17–02–2015 को सुबह हवन यज्ञ के द्वारा प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पं. विजय कुमार जी शास्त्री थे। सभी यजमानों तथा श्रद्धालुओं ने यज्ञ में आहुतियां डालकर पुण्य प्राप्त किया। यज्ञ के पश्चात ऋषि बोधोत्सव का कार्यक्रम श्री प्रेम कुमार भारद्वाज महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अध्यक्षता में शुरू हुआ। इस कार्यक्रम की शुरूआत श्री जगत वर्मा जी के सुमधुर भजन से हुई और उन्होंने श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इस बोधोत्सव में श्री अशोक परूथी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब, श्री सुधीर शर्मा कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री बनारसी दास जी, श्री महावीर मुमुक्षु जी ने अपने–अपने क्रान्तिकारी विचार रखे। उन्होंने कहा कि बोधोत्सव मनाने का वास्तविक लाभ तभी होगा जब हम भी बोध प्राप्त करके आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करेंगे। श्री प्रेम भारद्वाज जी द्वारा आर्य समाज के प्रचार प्रसार में पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों के द्वारा अलग–अलग आर्य समाजों के कार्यक्रमों में पहुंचकर ऋषि के संदेश को घर–घर तक पहुंचाने के संकल्प को दोहराया गया। आर्य समाज वेद मन्दिर के इस सफल कार्यक्रम पर भी उन्होंने आर्य समाज के अधिकारियों को मुबारकबाद दी व सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी का सन्देश दिया। इस अवसर पर एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई। ऋषि दयानन्द के जयघोषों तथा भजनों के द्वारा ऋषि दयानन्द के सन्देश को जन–जन तक पहुंचाया गया। सारा कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस सारे कार्यक्रम को सफल बनाने में सभा के अधिकारियों के अलावा आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर के संरक्षक श्री कमल किशोर, श्री सरदारी लाल आर्यरत्न, श्री राज कुमार प्रधान आर्य समाज, कोषाध्यक्ष श्री मनोहर लाल जी, उपमन्त्री श्री बिसम्बर दास जी, श्री लाभ चन्द जी, श्री रत्न लाल जी, श्री रमेश लाल जी, श्री मोनू जी, श्री अक्षय कुमार जी, व स्त्री आर्य समाज की महिलाओं का विशेष सहयोग रहा। सभी आर्य समाजों, आर्य समाज बस्ती वावा खेल, आर्य समाज बस्ती दानिशमन्दा, आर्य समाज आर्य नगर, आर्य समाज गान्धी नगर–1, आर्य समाज गान्धी नगर–2, आर्य समाज संत नगर का विशेष योगदान रहा। आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के अपने संकल्प को दोहराकर ऋषि की ज्वाला को जलते रखना ही हमारा फर्ज है।

–सुदेश कुमार आर्य महामन्त्री आर्य समाज

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर के ऋषि बोधोत्सव पर पधारे सभा महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी को सम्मानित करते हुए आर्य समाज के संरक्षक श्री सरदारी लाल जी आर्य जबकि उनके साथ खड़े हैं आर्य समाज के उपमन्त्री श्री बिशम्भर कुमार आर्य समाज के महामन्त्री श्री सुदेश कुमार, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार एवं सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी (ऊपर) एवं नीचे के चित्र में श्री सरदारी लाल जी आर्य एवं श्री प्रेम भारद्वाज जी, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट एवं श्री सुधीर शर्मा जी को सम्मानित करते हुए।

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।